P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-1* ISSUE-10* January- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मध्य प्रदेश के शैल चित्रों का विश्लेषात्मक अध्ययन

आभा गुप्ता
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
जुहारी देवी इण्टर कालेज,
कानपुर

सारांश

जब मनुष्य किसी धरातल पर एक बिन्दु का सृजन प्रारम्भ करता है वहीं से कई बिन्दुओं के मिलने पर रेखा का सृजन हो जाता है, उसी प्रकार इस रेखा के माध्यम से आकृति का सृजन या रूप का सृजन होता है जो हमें कलाकार की भावनाओं से अवगत कराती है।

सर्वप्रथम पाषाण मानव ने ही रेखा का सृजन किया होगा। उसके बाद इन रेखाओं के माध्यम से अपनी तत्कालीन परिस्थितियों व दैनिक जीवन से जुड़ी भावनाओं को अवगत कराया।

इन अनगढ़, विचित्र परन्तु मौलिक कलाकृतियों को हम कई नामों से पुकारते हैं। शैल चित्र, पाषाण चित्र गृहा चित्र आदि।

भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में ये शैल चित्र विभिन्न स्थानों से प्राप्त होते हैं।

भारत में मुख्य रूप से शैल चित्र मध्य प्रदेश क्षेत्र से प्राप्त होते हैं, जो प्राकृतिक चट्टानों, गुफाओं एवं कंदराओं से मिलते हैं। ये चित्र किसी निश्चित सीमा में बांध कर नहीं बनाये गये हैं, ये स्वतंत्र रूप से बिना किसी क्षैतिज रेखा के बनाई गई है।

आकृतियाँ हवा में उड़ते हुए बनाई गई हैं, इन चित्रों के ज्यादातर ज्यामितीय रेखाओं व आकारों का प्रयोग मिलता है। परन्तु अपनी मौलिकता व तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब होने के कारण इनका महत्व बढ़ जाता है, मेरा प्रयास इसी महत्व को सामने लाने का है जिसमें इसका एक विश्लेषण कर आगे की शैली में इसका प्रभाव व महत्व का अध्ययन सम्भव हो सके।

मुख्य शब्द : शैल चित्र,गृहा चित्र,पाषाण काल, पाषाण मानव, मध्य प्रदेश, भारतीय चित्रकला आदि।

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक मानव ने किसी प्रकार अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाव और विचारों का विकास किया जो उनके बनाये गये शैल चित्रों में दिखाई देती हैं–

ये शैल चित्र गुहाओं के अनगढ़ भोतरे चट्टानों पर खुदे या चित्रित किये गये हैं।

ये चित्र खनिज रंगों की सहायता से चट्टानों पर बनाये गये हैं।

प्रागैतिहासिक काल के नव प्रस्तर युगीन मानव ने भारत के सैकड़ों स्थानों पर चित्रावशेष छोड़े हैं। अतः यहाँ पर इस युग की चित्रकला के प्रमुख उदाहरणों में प्रमुख उदाहरण हमें बेलारी बाईनाड एडकल, सिंहनपुर', विन्ध्याचल, मिर्जापुर, रामगढ़, हरनीहरन, विल्लासंरगम आदि।

भारत में प्रागैतिहासिक आलेखनों एवं चित्रों का अनुशीलन करने वाले इन विद्वानों में– एलन हाटन ब्राड्रिक, स्टुअर्ट पिगॉट, डी0 व0 गॉर्डन, प्रो0 डब्ल्यू एण्डर्सन, जॉन काकबर्न, श्री एफ0आर0 अल्चिन, मनोरंजन दास घोष के नाम प्रमुख हैं।

मानव के विकास क्रम के साथ चित्रकला का प्रादुर्भाव हुआ। भारत के गुहा चित्रों शैल खण्डों गुफाओं के विचारों व कंदराओं आदि में ये चित्र देखे जा सकते हैं।

भाषा के अभाव में आदि मानव द्वारा रचित ये चित्र उनके रहन–सहन व उनके दैनिक जीवन शैली को प्रदर्शित करते हैं यूं तो भारत के विभिन्न क्षेत्रों के शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। किन्तु मध्य प्रदेश आदि मानव का प्रमुख स्थल रहा है।

हिन्दी का प्रागैतिहासिक प्रीहिस्ट्रीक का शाब्दिक अनुवाद हैं। जिसका सर्व प्रथम प्रयोग 1851 में डेनियल विल्सन ने अपनी पुस्तक दि आर्कियोलॉजी एण्ड प्रीहिस्टारिक एनाल्स ऑफ स्काट लैण्ड में किया था।

प्रागैतिहासिक युग के मानव द्वारा बनाये गये शैल चित्रों के नमूने विश्व में बहुत जगह मिले हैं और भारत में भी अनेक स्थानों पर पाये गये हैं। उस कला का तिथिक्रम का निर्धारण करना कुछ कठिन है किन्तु उसकी निजी विशेषताओं के आधार पर उसका अलग ही अस्तित्व प्रतीत होता है। जिससे उसे मानवीय कला की पहली सीढ़ी भी कह सकते हैं।

इनके अतिरिक्त मानव सुरक्षा की दृष्टि से सुरक्षित स्थानों या पर्वत कंदराओं में नदियों के समीप निवास करता था। इन गुहाओं को लोक भाषा में आज दरी कहते हैं। उन्हीं दरिया व गुफाओं के शैलों पर पाषाण मानव उस समय के चिन्हों को उकेरता था जिसे हम शैल चित्र, प्रस्तर चित्र आदि नामों से जानते हैं।

लोक भाषा में इन्हीं के लिए रकत की पुतरियाँ शब्द प्रचलित हैं इस प्रस्तर चित्रों में मध्य प्रदेश से प्राप्त शैल चित्रों का अपना एक अलग महत्व हैं। यहाँ विभिन्न कालक्रम के अनुसार अलग–अलग परतों में चित्र प्राप्त हुए हैं।

मध्य प्रदेश के शैल चित्रों का विशाल भण्डार प्राप्त हुआ है जिसे पूर्व में अंग्रेज शासकों द्वारा प्रकाश में लाया गया।

कार्बन डेटिंग आदि पद्धति के माध्यम से ये चित्र 15,000 से 25,000 ई0 पू0 के माने जाते हैं। मध्य प्रदेश में प्रमुख रूप से जिन स्थानों पर शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। पूर्व पाषाण युग में अभी तक चित्र प्राप्त नहीं हुए थे लेकिन इस तथ्य के विपरीत एक नया मोड़ प्रकाश में आया है कि मध्य प्रदेश में मुरैना जनपद के पहाड़गढ़ शियोपुर कला क्षेत्र में करीब 25,000 वर्ष पुराने चित्र अमेरिका के मिशनगन विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डी0पी0एस0 ह्मारिकेश को अभी कुछ वर्ष पूर्व मिले हैं।

चित्रों की आयु रेडियो कार्बेनिक विधि (C-14) से भी प्रमाणित हो गये हैं। वो निम्नवत् हैं– पंचगढ़ी, होशंगाबाद, सिंघनपुर, मोरैना, चित्रकूट आदि।

ये शैल चित्र अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण हैं।

समस्या

मध्य भारत के शैल चित्रों का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना। उसके महत्व को प्रकाश में लाना तथा जो तथ्य प्राप्त होते हैं उसके आधार पर निष्कर्षों को प्राप्त करना।

प्राकल्पना

मध्य भारत के शैल चित्रों का विश्लेषात्मक अध्ययन जिसमें मध्य प्रदेश में स्थित पाषाण स्थलों के संदर्भ में जहाँ से शैल चित्र प्राप्त हुए हैं।

सैद्धान्तिक आधार

ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति की सहायता से शोध के निष्कर्षों को प्राप्त करना जिसमें प्राप्त द्वितीय स्रोतों की सहायता से प्राक्कल्पना की प्राप्ति करना व उद्देश्य को प्राप्त करना।

संदर्भित शोध की उपादेयता

मध्य भारत में प्राप्त शैल चित्रों का अपना एक अलग स्थान है या यूं कह सकते हैं कि भारत में शैल चित्रों में सबसे उत्कृष्ट शैल चित्र मध्य प्रदेश में ही मिले हैं। जहाँ कई परतों में पाषाण मानव के जीवन की झलक हमें इन चित्रों में मिलती है। कुछ इतिहासकार इसे जादू टोना से सम्बन्धित भी मानते हैं।

इसका निर्णय लेना तो कठिन है कि ये चित्र किस उद्देश्य से बनाये गये थे। लेकिन ये सत्य है कि इन चित्रों के माध्यम से ही हम उस काल के दैनिक जीवन शैली को समझ सकते हैं जो पशु के आखेट से लेकर पशुपालन तक की तस्वीर हमारे सामने लाती है। इस विषय को और बेहतर ढंग से मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में प्रस्तुत करना ही मेरा उद्देश्य है।

विषय चयन

मानव के विकास क्रम के साथ चित्रकला के विकास क्रम को अगर हम देखें तो सर्वप्रथम शैल चित्रों का ही नाम हमारे संज्ञान में आता है।

अर्थात् इन शैल चित्रों को हम मानवीय कला की पहली सीढ़ी कह सकते हैं। इस संदर्भ में मेरा ध्यान सर्वप्रथम मध्य प्रदेश के शैल चित्रों की ओर केन्द्रित होता है।

जिसमें प्राप्त शैल चित्रों की तुलना स्पेन से स्थित अल्तामीरा गुफा के चित्रों से की जाती है। मध्य प्रदेश के शैल चित्रों के विषय में जन सामान्य को जागरुक करना व शैल चित्रों के महत्व से अवगत कराने के लिए मैंने इस विषय का चयन किया है। जिसमें भावी पीढ़ी भी मध्य प्रदेश में प्राप्त शैल चित्रों की विशेषताओं से अवगत व लाभान्वित हो।

इस विषय के माध्यम से होशंगाबाद व पंचमढ़ी के शैल चित्रों को प्रकाश में लाना ही मेरा उद्देश्य है–

शोध के उद्देश्य

मेरे शोध का उद्देश्य मध्य भारत के शैल चित्रों का विश्लेषात्मक अध्ययन कर उससे सम्बन्धित तथ्यों को लेकर निष्कर्षों को प्राप्त किया जा सके।

1. शैल चित्रों का परिचय
2. भारत में शैल चित्रों के प्राप्त साक्ष्यों का क्षेत्रगत रूप में अध्ययन
3. मध्य भारत में शैल चित्रों का वर्णनात्मक अध्ययन पंचमढ़ी, भीमवेटका, सिघनपुर, होशंगाबाद आदि।
4. मध्य भारत में प्राप्त शैल चित्रों के तकनीक व कलात्मक तत्वों का अध्ययन
5. शैल चित्रों का आधुनिक कला, वाल कला, लोक कला पर प्रभावों का अध्ययन व उसकी विशेषताओं का वर्णात्मक अध्ययन।

वर्तमान समय में शोध की प्रासंगिकता

इस शोध की मुख्य प्रासंगिकता यह है कि मध्य प्रदेश में प्राप्त शैल चित्रों में किन–किन क्षेत्रों में प्राप्त शैल चित्र आते हैं व उसकी तकनीक व विशेषता क्या हैं, उसके कलात्मक तथ्यों को प्रकाश में लाना व वर्तमान समय में शैल चित्रों को संरक्षण व संवर्धन प्रदान कराना है।

मध्य भारत में प्राप्त शैल चित्रों का अपना एक अलग स्थान है या यूँ कह सकते हैं कि भारत में शैल चित्रों में सबसे उत्कृष्ट शैल चित्र मध्य प्रदेश में ही मिले हैं। जहाँ कई परतों में पाषाण मानव के जीवन की झलक हमें इन चित्रों में मिलती है। कुछ इतिहासकार इसे जादू टोना से सम्बन्धित भी मानते हैं।

इसका निर्णय लेना तो कठिन है कि ये चित्र किस उद्देश्य से बनाये गये थे। लेकिन ये सत्य है कि इन चित्रों के माध्यम से ही हम उस काल के दैनिक जीवन शैली को समझ सकते हैं। जो पशु आखेट से लेकर पशु पालन तक की तस्वीरें हमारे सामने लाती है इस विषय को और बेहतर ढंग से होशंगाबाद एवं पंचमढ़ी के विशेष संदर्भ में प्रस्तुत करना ही मेरा उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

1. ऐतिहासिक विधि
2. सर्वेक्षण विधि

उपर्युक्त प्रस्तावित उद्देश्यों में प्राप्त करने हेतु जिन उपकरण, संसाधन व विधि का सहयोग लिया जायेगा उनका उल्लेख निम्नवत् हैं–

उपकरण

1. कम्प्यूटर
2. वेबसाइट
3. वाइस रिकार्डर
4. कैमरा आदि

स्रोत

1. उपलब्ध साहित्य, पत्र–पत्रिकाएं
2. साक्षात्कार
3. कला संस्थान
4. कला समितियाँ
5. ललित कला अकादमी

परिसीमन

शोध का परिसीमन निम्नानुसार किया जा रहा है।

विषयगत

शोध का विषय मूलतः मध्य भारत के शैल चित्रों के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है।

क्षेत्रीय

क्षेत्रीय सीमांकन मध्य प्रदेश है परन्तु प्रमुख रूप से मध्य प्रदेश के अन्तर्गत प्राप्त वह स्थल है जहाँ पर शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। जैसे भीमवेटका, पंचमढ़ी, चित्रकूट, होशंगाबाद, सिघनपुर आदि क्षेत्र तक ही सीमित हैं। विशेष रूप से होशंगाबाद एवं पंचमढ़ी में निहित हैं।

कलाविधि

इसके अन्तर्गत पूर्व पाषाण युग से नव पाषाण युग तक में प्राप्त शैल चित्रों का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

भारतीय चित्रकला के इतिहास में शैल चित्रों का अपना महत्व है क्योंकि ये चित्र भारतीय चित्रकला की नींव हैं या यूं कहें कि यहीं से भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रारम्भ होता है।

इन शैलों व चट्टानों से होते हुए ये चित्र ताड़ पत्रों तथा कागजों पर पहुँची। इसके साथ ही ये चित्र तत्कालीन समाज की छवि हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। यही इसका सबसे बड़ा महत्व है।

ये चित्र अनगढ़ भोतरे चट्टानों पर बनाये गये हैं तथा इसकी आकृतियों का निर्माण ज्यामितीय रेखाओं व आकारों की सहायता से किया गया है। इन चित्रों में खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है व इसका मुख्य विषय आखेट है।

यह भी कहा जाता है कि गुहावासी मानव आखेट करने से पूर्व आदिम पशु का चित्र बनाकर कुछ जादू टोना टोटका आदि करके आखेट की सफलता पर विश्वास करता था इसी विश्वास के कारण वह ये चित्र अंकित करता था। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि इन चित्रों में ही प्रागैतिहासिक युग के मनुष्य का सम्पूर्ण इतिहास संचित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आधुनिक भारतीय चित्रकला – डा. किशोर अग्रवाल प्रथम संस्करण, 1994 किताबघर, 24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002*
2. *कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन – डा. आर.ए. अग्रवाल, संस्करण–2000 इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ–250001*
3. *बुन्देलखण्ड की लोकचित्र कला – श्रीमती मधु श्रीवास्तव, प्रथम संस्करण मार्च, 2002, निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र*
4. *भारतीय कला और संस्कृति, मुख्य सम्पादक, गोविन्द नन्द पाण्डेय, सम्पादक – उदय शंकर तिवारी प्रथम संस्करण 1995 राका प्रकाशन, 40ए मोती लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद–211002.*
5. *भारतीय लोक माध्यम – महेन्द्र भानावत्, श्रीकृष्ण जुगनू, प्रथम संस्करण–2007, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, प्लाट नं0 1, झालना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर–302004*
6. *भारत की चित्रकला, डा. दिनेश चन्द्र गुप्त, संस्करण–2005 धर्मा प्रकाशन, 355ए/1, सावित्री पार्क, मधवापुर, बैरहना, इलाहाबाद– 211003*
7. *भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागी अनुवाद सोमित्र मोहन, प्रथम संस्करण – 2006, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ए–5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली–110016*
8. *विन्ध्य क्षेत्र की लोक चित्रकला, नन्दिता शर्मा, प्रथम संस्करण, 1994 किताबघर, 24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002*
9. *राजस्थान की ग्रामीण कलाएँ एवं कलाकार, गुलाब कोठारी, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर 1997, मुद्रक जयपुर प्रिन्टर्स, प्रा0लि0, एम0आई0 जयपुर –302001*
10. *वासुदेव शरण अग्रवाल : भारतीय कला वाराणसी, 1999 पृ–24*
11. *अविनाश बहादुर वर्मा : भारतीय चित्रकला का इतिहास*
12. *डॉ रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास*